हौज कौसर

अब ताल पाल की क्यों कहूं, बन पांच हार गिरदवाए।
फिरती द्योहरी चबूतरे, सोभा इन मुख कही न जाए।। १ ।।

हौज कौसर ताल की पाल को घेर कर बड़े वन के वृक्षों की पांच हारें (कतारें) आई हैं और १२८ द्योहरियां और चबूतरे आए हैं। इस शोभा का वर्णन कैसे करूं?

बड़े घाट ताल के चार हैं, चारों सनमुख बराबर।
दोऊ तरफ उतरती द्योहरी, तले आगूं चबूतर।। २ ।।

तालाब के चार बड़े घाट आमने-सामने हैं। ऊपर द्योहरियों के सामने वाले चबूतरों से सीढ़ियां नीचे चबूतरों पर उतरती हैं।

पाल ऊपर जो द्योहरियां, आगूं हर द्योहरी चबूतर।
तिन दोऊ तरफों सीढ़ियां, जित होत चढ़ उतर।। ३ ।।

पाल के ऊपर जो द्योहरियां हैं उनके आगे (१२८) चबूतरे हैं जिनकी दोनों तरफ चढ़ने-उतरने की सीढ़ियां आई हैं।

सीढ़ी मुकाबिल सीढ़ियां, आए मिलत हैं जित।
दो दो बीच द्वार नें, सबों सोभित परकोटे इत।। ४ ।।

आमने-सामने की सीढ़ियां जहां आकर नीचे चबूतरे पर मिलती है वहां आमने-सामने दो दरवाजे हैं (छोटी १२४ द्योहरी के) और सीढ़ियों पर कठेड़ा (परकोटा) बना है।

खिड़की मुकाबिल खिड़कियां, अन्दर बाहेर जे।
जो सुख हैं मोहोलन के, कब लेसीं हम ए।। ५ ।।

पाल के नीचे भी (२५६) महलों की दो हारें आई हैं जिनकी खिड़कियां आमने-सामने हैं। यहां के सुख हमें कब मिलेंगे?

ऊपर परकोटे कांगरी, ऊपर हर द्वार नों।
कांगरी पाल किनार पर, सिफत आवे ना जुबां मों।। ६ ।।

ऊपर कठेड़ा के कांगरी आई है और हर दरवाजे के ऊपर भी कांगरी पाल के किनारे पर आई है। इसकी शोभा जबान से कहने में नहीं आती।

दोऊ द्वार बीच मेहेराब जो, ए सोभा कहूं क्यों कर।
पड़साल आगूं सबन के, गिरदवाए सोभा जल पर।। ७ ।।

बड़े घाट के दरवाजे के बीच की जो मेहराब आई है उसकी शोभा कैसे कहूं? इनके आगे पड़साल है और जल की शोभा है।

अब जल की सोभा क्यों कहूं, हम करती इत झीलन।
चित्त चाहे करें सिनगार, ए सुख कब लेसीं मोमिन।। ८ ।।

उस जल की शोभा कैसे कहें? हम जहां नहाया करती थीं और मन चाहे सिनगार करती थीं। यह सुख हम मोमिनों को कब मिलेंगे?

Nijanand App

मासूक संग सुख मिल के, इत हिंडोले पाल पर।
सो सुख याद क्यों न आवहीं, जो हम लेती मिलकर।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ मिलकर हम पाल के अन्दर (१२४) हिंडोलों की दो हारों में झूलते थे। वह सुख हमें याद क्यों नहीं आते जो हम मिलकर लेते थे।

सब एक हीरे की पाल है, टापू मोहोल याही के।
अनेक रंगों कई जुगते, किन विध कहूं मुख ए।। १० ।।

तालाब के चारों तरफ एक हीरे की पाल है और बीच में एक ही हीरे का टापू महल है। यहां कई रंगों की कई तरह की शोभा दिखाई देती है। उसका बयान यहां की जबान से कैसे करूं?

चांदनी झरोखे बैठ के, किन विध लेती सुख।
सो याद देत धनी इन जिमी, काल क्यों काटूं माहें दुख।। ११ ।।

टापू महल के चांदनी से झरोखों में बैठकर हम अपार सुख लेते थे। जिनकी याद श्री राजजी महाराज इस जमीन में करा रहे हैं। अब मैं दुःख के संसार में बैठकर उस सुख के बिना समय कैसे काटूं?

हकें सुख अर्स देखाइया, इलम दे करी बेसक।
हम क्यों रहें इन मासूक बिना, जो कछुए होए इस्क।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान देकर परमधाम के सुख दिखाए। यदि हमारे अन्दर कुछ भी इश्क हो तो ऐसे श्री राजजी महाराज के बिना हम कैसे रहें?

इन मोहोल सुख रूहों के, और सुख घाटों चार।
हाए हाए क्यों जाए हमें रात दिन, ए सुख बैठी रूहें हार।। १३ ।।

टापू महल के सुख, चारों घाटों के सुख, हाय! हाय!, हम रूहें क्यों हारकर बैठ गईं, यह सुख हमें रात-दिन तड़पाते हैं।

याद देत हक ए सुख, हाए हाए तो भी न लगे घाए।
ऐसी बेसकी ले क्यों रहे, जो होए अर्स अरवाए।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज हमें परमधाम के सुख को याद करा रहे हैं। यदि हम अर्श की आत्माएं हैं तो ऐसी बेशक वाणी लेकर हाय! हाय! हमारे कलेजे में घाव क्यों नहीं लगते?

हक हुकम ऐसा करत है, ना तो तेहेकीक ना रहे तन।
अब हक इत रूहों राखत, कोई अचरज हांसी कारन।। १५ ।।

यह सब श्री राजजी के हुकम से ऐसा हो रहा है। नहीं तो यह तन यहां रह ही नहीं सकता। श्री राजजी महाराज रूहों के ऊपर अजीब हंसी करने के वास्ते ही उन्हें यहां रखे हुए हैं।

याद करों सुख हांसीय के, के याद करों सुखपाल।
के याद करों तले मोहोल के, हाए हाए अजूं ना बदलत हाल।। १६ ।।

हे मोमिनो! इस हंसी के सुख को याद करो। सुखपालों को याद करो। तालाब के नीचे बने महलों को याद करो। हाय! हाय! इतने पर भी तुम्हारी रहनी नहीं बदलती?

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ११२५ ॥

Nijanand App